राजस्थान दिवस ( Rajasthan Day) इसे राजस्थान का स्थापना दिवस भी कहा जाता है। हर वर्ष के तीसरे महिने (मार्च) में 30 तारीख को राजस्थान दिवस मनाया जाता है। 30 मार्च, 1949 में जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर और बीकानेर रियासतों का विलय होकर 'वृहत्तर राजस्थान संघ' बना था।

**30** मार्च राजस्थान दिवस **2023**

राजस्थान दिवस 2023 : इस दिन राजस्थान के लोगों की वीरता, दृढ़ इच्छाशक्ति तथा बलिदान को नमन किया जाता है। यहां की लोक कलाएं, समृद्ध संस्कृति, महल, व्यंजन आदि एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। इस दिन कई उत्सव और आयोजन होते हैं जिनमें राजस्थान की अनूठी संस्कृति का दर्शन होता है।

30 मार्च 1949 ई को राजस्थान का गठन हुआ था| इसी दिन को राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता हैं| मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की पहल पर 30 मार्च 2023 को राजस्थान दिवस समारोह लाभार्थी उत्सव के रूप में मनाया गया|

इसे पहले राजपूताना के नाम से जाना जाता था तथा कुल 19 रियासतों को मिलाकर यह राज्य बना तथा इसका नाम "राजस्थान" किया गया जिसका शाब्दिक अर्थ है "राजाओं का स्थान" क्योंकि स्वतंत्रता से पूर्व यहां कई राजा-महाराजाओं ने राज किया।

राजस्थान का एकीकरण 7 चरणों में हुआ। इसकी शुरुआत 18 अप्रैल 1948 को अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली रियासतों के विलय से हुई।

विभिन्न चरणों में रियासतें जुड़ती गईं तथा अंत में 30 मार्च 1949  को जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर और बीकानेर रियासतों के विलय से "वृहत्तर राजस्थान संघ" बना और इसे ही राजस्थान स्थापना दिवस कहा जाता है। इसमें सरदार वल्लभभाई पटेल की सक्रिय भूमिका रही।

राजस्थान के एकीकरण में 8 वर्ष 7 माह 14 दिन का समय लगा|

इस दिन राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों का मुख्य केंद्र जयपुर होता है। इनमें कैमल टैटू शो, खेलकूद प्रतियोगिताएं, बच्चों के लिए फ़िल्म फेस्टिवल, विभिन्न संभागों की झांकियां एवं नृत्य, भजन, फैशन शो तथा संगीत कॉन्सर्ट का आयोजन शामिल है।

■ राजस्थान की संस्कृतियां

'भारत की सांस्कृतिक राजधानी' राजस्थान, दुनिया के सबसे आकर्षक पर्यटन स्थलों में से एक, ' महाराजाओं की भूमि' एक ऐसा स्थान है |

जो सबसे शानदार रंगों और संस्कृतियों को प्रदर्शित करता है वेशभूषा से लेकर लोगों के खान-पान, धार्मिक समारोह से लेकर सामाजिक समारोहों तक, अभी भी राजस्थान अपनी विविध  परंपराओं और समृद्ध संस्कृतियों का पालन करता है|

आइए जानते हैं राजस्थान के सांस्कृतिक पहलुओं के बारे में ----

मूल परिचय

राजस्थान का इतिहास जो सिंधु घाटी और हड़प्पा सभ्यता के इतिहास जितना पुराना है मानव बस्तियों के पहले निशान जो ब्रह्मवात्रा मेहरानागढ़  और रेवाड़ी क्षेत्रों के आस पास पाए गए थे|

उनका अनुमान 5000 वर्ष से अधिक पुराना था पूरे राज्य में पाए गए सबूतों ने यह स्पष्ट कर दिया कि देश का यह हिस्सा शुरू में आदिवासी समूह की एक की विविध श्रेणी द्वारा बाधित था | इन जातियों में भील, मिनस, लोहार, गरसिया और सहरिया सबसे प्रमुख थे|

राजस्थान का क्षेत्रफल

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है| तथा जनसंख्या की दृष्टि से भारत का सातवां सबसे बड़ा राज्य हैं| इसका क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है| राजस्थान का थार मरुस्थल की सीमा पंजाब , हरियाणा , गुजरात , उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश से लगती हैं| राजस्थान की साक्षरता दर 66.1% है , जबकि लिंग अनुपात 928 है|

परंपरागत पोशाक

राजस्थान की पारंपरिक पोशाकों में चमकीले रंग, जटिल डिजाइन, दर्पण के काम और चांदी या अन्य आभूषण के टुकड़े राजस्थानी पोशाक के सबसे महत्वपूर्ण तत्व है|

पुरुष या महिलाएं के सभी अपनी परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर खुद को सबसे रंगीन तरीकों से सजाना पसंद करते हैं|

पुरुष आमतौर पर पगड़ी पहनना पसंद करते हैं जोधपुरी सफा और जयपुरिया पगड़ी राजस्थान में उपयोग की जाने वाली पगड़ी के दो सबसे लोकप्रिय रूप है|

तथा  कुछ जगहों पर पुरुष 'पायजामा' को पहनना पसंद करते हैं| राजस्थानी पुरुषों का कुर्ता या अंगरखा नामक एक पारंपरिक पोशाक ज्यादा पसंद करते  है|

राजस्थान में महिलाओं का रंग बिरंगे कपड़े और शास्त्रीय गहनों से गहरा नाता है जो कि साड़ी को सबसे पारंपरिक महिलाओं के पहनावे के रूप में जाना जाता है|

राजस्थान की भाषा

राजस्थानी नागरी लिपि में लिखी जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ के पुराने लोगों में अब भी एक भिन्न लिपि प्रचलित है, जिसे "बाण्याँ वाटी" कहा जाता है।

🔸 इस लिपि में प्रायः मात्रा-चिह्न नहीं दिए जाते। राजस्थानी बनिये आज भी बहीखातों में इस लिपि का प्रयोग करते हैं।

🔸 राजस्थानी भाषा की मुख्यतः आठ बोलियां है जिनका कुछ अन्य उपबोलियों में भी विभाजन किया जाता है।

🔸 भारत की जनगणना 1991 व 2011 के अनुसार निम्न बोलियाँ आधुनिक राजस्थानी भाषा के प्राथमिक वर्गीकरण के अंतर्गत आती है-

🔸 मारवाड़ी बोली, हाड़ौती बोली, मेवाड़ी बोली, ढूंढाड़ी बोली, शेखावाटी बोली, बागड़ी बोली, वागड़ी बोली, मेवाती बोली|

राजस्थान के लोक नृत्य

राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध या महत्वपूर्ण नृत्य शैली घूमर और झूमर है।

घूमर नृत्य राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध नृत्य है और यहाँ महिलाओ द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ नृत्य हाल ही में और प्रसिद्ध हो गया है।

घूमर नृत्य **:-** हर शब्द का अर्थ है घूमना से लिया गया है जिसका मतलब है कि गोलाकार में घूमना यह एक बहुत ही साधारण नृत्य है

घेर नृत्य :- यह नृत्य भील आदिवासियों का एकमात्र प्रस्तुत नृत्य कला है यह नृत्य होली के त्योहार पर दोनों आदमी और औरतों के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है|

चरी नृत्य **:-** राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध नृत्य है जो ज्यादातर किशनगढ़ में किया जाता है| इस नृत्य में नृत्यक चरी या मटके को अपने सिर पर धारण करते हैं|

कठपुतली नृत्य :- राजस्थान की कठपुतली नृत्य पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है| राजस्थान की परंपरा और अतीत की कहानियों को कठपुतलियों के माध्यम से दर्शाया जाता है| स्ट्रिंग कठपुतली राजस्थान की प्रसिद्ध कठपुतली है|

कच्ची घोड़ी नृत्य :- यह नृत्य शेखावटी के बेंडिट क्षेत्र से आरंभ किया गया है| यह नृत्य शादी में लोगों को मनोरंजन के लिए पुरुष द्वारा प्रस्तुत किया जाता है|

राजस्थान के प्रतीक चिन्ह

राज्य पुष्प - रोहिडा
राज्य पक्षी - खेजरी
राज्य वृक्ष - गोडावण
राज्य पशु - चिंकारा तथा ऊंट
राज्य खेल - बास्केटबॉल
राज्य नृत्य - गुमर

राजस्थान से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बातें:

राजस्थान का राष्ट्रीय पशु चिंकारा और ऊंट है| चिंकारा को भारतीय गेज़ल के नाम से भी जाना जाता है

और यह ज्यादातर पहाड़ी मैदानों, पहाड़ियों और रेगिस्तानी इलाकों में रहते हैं| ऊंट को रेगिस्तान का जहाज भी कहा जाता है|

राजस्थान का राष्ट्रीय खेल "बास्केट बॉल" है|

राजस्थान का राज्य वृक्ष "खेजरी" और राज्य पुष्प "रोहिड़ा" है|

राजस्थान राज्य में 33 जिले हैं और सबसे बड़ा जिला जैसलमेर है| इसी के साथ राज्य में सात मंडल हैं: जोधपुर, बीकानेर, जयपुर, अजमेर, भरतपुर, कोटा और उदयपुर|

राजस्थान में एक सदन है जिसमें 200 विधानसभा सीट हैं|

लोकसभा में राजस्थान की 25 सीट हैं और राज्यसभा में 10 सीट हैं|

**FAQ**

**Q.1** राजस्थान की किस सिटी को पिंक सिटी के नाम से जाता है**?**

Ans.  जयपुर को पिंक सिटी के नाम से जाना जाता है|

**Q. 2  30** मार्च **2023** को कौन सा राजस्थान दिवस मनाया गया  है**?**

Ans  74 वां राजस्थान दिवस मनाया गया हैं|

**Q.3** राजस्थान दिवस कब मनाया जाता हैं**?**

Ans. प्रत्येक 30 मार्च को राजस्थान का स्थापना दिवस मनाया जाता हैं| 30 मार्च 2023 को राजस्थान के स्थापना को 74 वर्ष हुआ| राजस्थान के एकीकरण में सरदार वल्लभ भाई पटेल का विशेष योगदान था|

**Q.4** प्रथम बार राजस्थान दिवस कब मनाया गया**?**

Ans राजस्थान का एकीकरण 7 चरणों में हुआ। इसकी शुरुआत 18 अप्रैल 1948 को अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली रियासतों के विलय से हुई।  विभिन्न चरणों में रियासतें जुड़ती गईं तथा अंत में 30 मार्च 1949  को जोधपुर, जयपुर, जैसलमेर और बीकानेर रियासतों के विलय से "वृहत्तर राजस्थान संघ" बना और इसे ही राजस्थान स्थापना दिवस कहा जाता है। इसमें सरदार वल्लभभाई पटेल की सक्रिय भूमिका रही।

**Q.5** राजस्थान का पुराना नाम क्या है**?**

Ans.  राजस्थान को आज़ादी से पहले राजपुताना के नाम से जाना जाता था, इतिहासकारों का कहना है कि जार्ज थॉमस ने वर्ष 1800 में राजपुताना नाम दिया तथा कर्नल जेम्स टॉड ने इसका नाम राजस्थान रखा|